International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

आंदोलन में महिलाओं की भूमिका: स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में

ललित कुमार, शोधार्थी (इतिहास) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. मुकेश हर्ष, सहायक आचार्य (इतिहास) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

अमूर्त

यह शोध पत्र भारत के स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण और बहुआयामी भूमिका का विश्लेषण करता है। यह उस कालखंड का अध्ययन करता है जब महिलाओं ने पारंपरिक सामाजिक सीमाओं को तोड़कर राजनीतिक और क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। शोध का उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर नेतृत्व से लेकर ग्रामीण स्तर पर सविनय अवज्ञा आंदोलन और अहिंसक विरोध प्रदर्शनों में उनकी भागीदारी के विभिन्न आयामों को उजागर करना है। विशेष रूप से, यह पत्र उन निर्धारक तत्वों (जैसे महात्मा गांधी का आह्वान और सामाजिक सुधार आंदोलन) की जाँच करता है जिन्होंने महिलाओं को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। निष्कर्ष यह बताते हैं कि महिलाओं की भागीदारी ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को मजबूती दी, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री मुक्ति (Women's Emancipation) की नींव भी रखी।

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन (1857–1947) एक राष्ट्रव्यापी संघर्ष था जिसमें समाज के हर वर्ग ने योगदान दिया। हालाँकि, इस महासंग्राम में महिलाओं की भूमिका अक्सर इतिहास के मुख्यधारा के आख्यानों में कम आँकी गई है। पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं को पर्दे के पीछे रखा जाता था, लेकिन स्वतंत्रता की पुकार ने उन्हें सार्वजनिक और राजनीतिक दायरे में आने का अभूतपूर्व अवसर दिया। महिलाओं ने केवल समर्थक (supporters) की भूमिका नहीं निभाई, बल्कि उन्होंने सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया, चाहे वह रानी लक्ष्मीबाई का प्रारंभिक सैन्य प्रतिरोध हो, एनी बेसेंट का होमरूल आंदोलन हो, या सरोजिनी नायडू का राष्ट्रीय मंच पर नेतृत्व हो। इस शोध का लक्ष्य उन विभिन्न तरीकों और चरणों का अध्ययन करना है जिनके माध्यम से भारतीय महिलाओं ने स्वाधीनता की लड़ाई में अपने घर की चारदीवारी से निकलकर महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सोपान

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को समय और कार्य की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख सोपानों में विभाजित किया जा सकता है : 1. प्रारंभिक प्रतिरोध और विद्रोह का चरण (1857 – 1905) इस चरण की मुख्य विशेषताएँ रानी लक्ष्मीबाई जैसे शासकों का सशस्त्र संघर्ष और कुछ सामाजिक–धार्मिक आंदोलनों में महिलाओं की सीमित भागीदारी थीं। 2. स्वदेशी और क्रांतिकारी चरण (1905 – 1920) बंगाल विभाजन के विरोध में हुए स्वदेशी आंदोलन में महिलाओं ने बहिष्कार (Boycott) और विदेशी वस्तुओं को जलाने जैसी गतिविधियों में भाग लेना शुरू किया। इस दौरान, भिकाजी कामा जैसी महिलाओं ने विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 3. गांधीवादी जन आंदोलन चरण (1920 – 1940) यह महिलाओं की भागीदारी का सबसे व्यापक और संगठित चरण था। महात्मा गांधी के अहिंसक कार्यक्रमों (जैसे असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन) ने महिलाओं को घर से बाहर निकलकर सत्याग्रह, धरने और विदेशी कपड़े तथा शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करने के लिए प्रेरित किया। कमलादेवी चट्टोपाध्याय और विजयलक्ष्मी पंडित जैसी महिलाओं ने राष्ट्रीय नेतृत्व में अपनी जगह बनाई। 4. अंतिम संघर्ष और भारत छोड़ो आंदोलन (1940 – 1947) इस चरण में महिलाओं ने भूमिगत (Underground) गतिविधियों में भी भाग लिया। अरुणा आसफ अली ने श्भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान नेतृत्व किया, और ग्रामीण क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में महिलाओं ने जेल जाना स्वीकार किया। सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज में रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन महिलाओं की सशस्त्र भागीदारी का प्रतीक था।

साहित्य का औचित्य

यह शोध आवश्यक है क्योंकि यह न केवल ऐतिहासिक तथ्यों को दोहराता है, बल्कि लिंग (Gender) के परिप्रेक्ष्य से स्वतंत्रता आंदोलन के अध्ययन की आवश्यकता पर बल देता है। महिलाओं की भागीदारी को केवल संख्यात्मक रूप से नहीं, बल्कि आंदोलन के वैचारिक और सामाजिक परिणाम के रूप में देखा जाना चाहिए। उनकी सक्रियता ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता को आगे बढ़ाया, बल्कि महिलाओं के लिए शिक्षा, समानता और राजनीतिक अधिकारों की माँग को भी बल दिया। यह शोध स्थापित करेगा कि महिलाएं स्वतंत्रता आंदोलन की निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं थीं, बल्कि सक्रिय निर्माता थीं।

उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंरू स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न चरणों में महिलाओं की

भागीदारी के पैटर्न और प्रकृति का पता लगाना। महात्मा गांधी और अन्य नेताओं द्वारा महिलाओं को आंदोलन में शामिल करने के लिए उपयोग की गई रणनीतियों और प्रेरणाओं का विश्लेषण करना। महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता और उनके सामाजिक सशक्तिकरण (Social Empowerment) के बीच के संबंध की जाँच करना। उन प्रमुख महिला नेताओं और गुमनाम महिला कार्यकर्ताओं के विशिष्ट योगदानों को उजागर करना जिन्होंने आंदोलन की दिशा को प्रभावित किया।

परिकल्पना

इस शोध की प्रमुख परिकल्पनाएं (Hypotheses) निम्नलिखित हैं: मुख्य परिकल्पना (\text{H}_1): भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ने केवल राजनीतिक संघर्ष को ही नहीं बढ़ाया, बल्कि भारतीय समाज में लैंगिक समानता और स्त्री–मुक्ति के लिए सामाजिक सुधारों की प्रक्रिया को भी तेज किया। वैकल्पिक परिकल्पना (\text{H}_2): गांधीवादी आंदोलन की विचारधारा (अहिंसा, सत्याग्रह, और चरखा) ने भारतीय महिलाओं को सार्वजनिक और राजनीतिक क्षेत्र में शामिल होने के लिए एक सुरक्षित और सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य मंच प्रदान किया, जो क्रांतिकारी गतिविधियों से अधिक प्रभावी था।

महत्त्व

यह शोध ऐतिहासिक ज्ञान की खाई को पाटने का काम करेगा। यह युवा पीढ़ी को महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और संघर्ष से परिचित कराएगा, जो अक्सर पाठ्यपुस्तकों में गुमनाम रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध लैंगिक इतिहास (Gender History) के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु प्रदान करेगा और यह समझने में सहायक होगा कि किस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश के द्वार खोले, जिसका प्रभाव आज भी भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पर देखा जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका पर कुछ महत्वपूर्ण अकादमिक कार्य हुए हैं : गेराल्डिन फोर्ब्स (Geraldine Forbes) की श्वीमेन इन मॉडर्न इंडियाश जैसे कार्य इस बात पर जोर देते हैं कि राष्ट्रीय आंदोलन ने महिलाओं को राजनीतिक चेतना विकसित करने में कैसे मदद की। मधु किश्वर ने अपने कार्यों में गांधी की विचारधारा के प्रभाव का विश्लेषण किया, जिसमें उन्होंने यह स्थापित किया कि गांधीवादी तरीके महिलाओं की पारंपरिक मर्यादाओं का उल्लंघन किए बिना उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करने में सहायक थे। सुमित सरकार और बिपिन चंद्र जैसे इतिहासकारों ने अपने सामान्य इतिहास लेखन में महिलाओं की भूमिका को मान्यता दी है, लेकिन उनका ध्यान समग्र आंदोलन पर अधिक रहा है। मौजूदा साहित्य अक्सर या तो महान महिला नेताओं पर ध्यान केंद्रित करता है या गांधीवादी चरण पर। यह शोध पत्र सभी सोपानों की भागीदारी की प्रकृति की तुलना करके और उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करके इस साहित्य को और समृद्ध करने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष

यह शोध स्थापित करता है कि महिलाओं की भूमिका भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का एक अभिन्न और निर्णायक तत्व थी। उन्होंने घर–घर घूमकर राष्ट्रीय चेतना जगाने से लेकर, विशाल प्रदर्शनों का नेतृत्व करने और जेल की यातनाएं सहने तक, हर मोर्चे पर अपनी अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

परिकल्पना

(\text{H}_1) और (\text{H}_2) दोनों की पुष्टि होती है। गांधीजी के आह्वान ने महिलाओं को बड़े पैमाने पर संगठित किया, और इस भागीदारी ने भारत में महिलाओं के सामाजिक और राजनीतिक अधिकारों के लिए एक स्थायी आधार तैयार किया। स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रियता केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक साधन नहीं थी, बल्कि यह पितृसत्तात्मक संरचनाओं (Patriarchal Structures) को चुनौती देने और एक नए, अधिक समान समाज की नींव रखने का एक शक्तिशाली माध्यम भी था। उनकी विरासत हमें यह याद दिलाती है कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिक वर्ग की पूर्ण और सक्रिय भागीदारी के बिना अधूरा है।

ग्रंथ सूची

- Forbes, Geraldine. (Women in Modern India). Cambridge University Press, 1996.
- Kishwar, Madhu. (Gandhi and Women's Movement in India). Economic and Political Weekly, 1985.
- Sarkar, Sumit. (Modern India: 1885-1947). Palgrave Macmillan, 2000.
- Chandra, Bipin, et al. (India's Struggle for Independence). Penguin Books, 1989.
- Basu, Aparna. (The Role of Women in the Indian Freedom Struggle). Routledge, 2017.
- Pandey, Gyanendra. (The Ascendancy of the Congress in Uttar Pradesh: Class, Community and Nation in Pre-1947 India). Anthem Press, 2002.